विद्या भारती संकुल संवाद

सा विद्या या विमुक्तये

जून 2023 ज्येष्ठ-आषाढ़। विक्रमी सं. 2080

विद्या भारती के कार्यकर्ता बालासोर (उड़ीसा) में ट्रेन दुर्घटना पीड़ितों की सहायता के लिए पहुंचे...

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

अखिल भारतीय बैठक

अखिल भारतीय टोली, क्षेत्र मंत्री-संगठन मंत्री

अखिल भारतीय बैठक (अखिल भारतीय टोली, क्षेत्र मंत्री-संगठन मंत्री)

- विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की केन्द्रीय टोली, क्षेत्रीय मंत्री, संगठन मंत्री, सह-संगठन मंत्री समूह की बैठक दिनांक 24 से 26 जून 2023 तक केदारधाम,भाग्यनगर (हैदराबाद) में संपन्न हुई।
- 36 उपस्थिति। कुल 12 सत्रों में विभिन्न विषयों पर चर्चा।
- सितंबर में होने वाली अखिल भारतीय कार्यकारिणी समिति की बैठक तथा अखिल भारतीय चिंतन बैठक (दिसंबर 23, 2023) के लिए विषय सूची पर विचार।
- 2025 को केंद्रित कुछ बड़े अखिल भारतीय स्तर के कार्यक्रमों की योजना।
- NEP 2020 तथा NCF for ECCE के क्रियान्वयन की स्थिति की समीक्षा और अगामी कार्य योजना।
- बेंगलुरु में साधरण सभा के पश्चात क्षेत्र / प्रांतश: सम्पन्न, प्रशिक्षण कार्यक्रम की समीक्षा।
- ATL की गतिविधियों की समीक्षा एवं कार्य योजना।
- संस्कृति बोध परियोजना में प्रस्तावित परिवर्तनों तथा संपर्क अभियान पर चर्चा।
- मा. डॉ. कृष्णगोपाल सहसरकार्यवाह तथा मा. अरुण कुमार सहसरकार्यवाह विशेष रूप से उपस्थित रहे।

शिक्षा का महाकुंभ RASE-23

नौकरी करने वाले नहीं, नौकरी देने वाले बनें युवाः राज्यपाल महामहिम बंडारू दत्तात्रेय

भारत की शिक्षा में भारतीयता जरूरीः केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर

जालंधर। केंद्रीय सूचना प्रसारण, युवा कार्यक्रम और खेल मंत्री श्री अनुराग ठाकुर ने डॉ. भीमराव अंबेडकर एन.आई.टी. में "शिक्षा का महाकुंभ RASE-23" का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को साढ़े छह लाख लोगों के सुझाव प्राप्त होने के पश्चात लागू किया गया है। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा रहना चाहिए और यह मूल्य आधारित होनी चाहिए। भारतीयता के आधार पर भारत की शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिए। भारत की शिक्षा व्यवस्था में भारतीयता का समावेश होना चाहिए।

हरियाणा के राज्यपाल महामहिम बंडारू दत्तात्रेय ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में तीन बिंदुओं पर विशेष बल दिया गया है - तकनीक, इनोवेशन और रिसर्च। भारत के प्राचीन ज्ञान को नवीन ढंग से प्रस्तुत करके देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए यह शिक्षा नीति बनाई गई है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने इसे 2030 तक पूरे देश में लागू करने का लक्ष्य रखा है, लेकिन हरियाणा में 2025 तक ही लागू हो जाए ऐसा मेरा प्रयास है। महामहिम ने कहा कि बेरोजगारी की समस्या का समाधान स्वयं हमारे पास है और वह है युवाओं में कौशल विकास। हम नौकरी करने वाले नहीं, बल्कि नौकरी देने वाले बनें।

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र के महामंत्री श्री देशराज शर्मा ने कहा कि शिक्षा कौशल आधारित होनी चाहिए। प्राचीन ज्ञान के आधार पर वर्तमान एवं भविष्य की चुनौतियों का समाधान करने में 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति पूर्ण रूप से सक्षम है। स्वदेशी जागरण मंच के अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री श्री सतीश कुमार ने कहा कि देश की युवा शक्ति आधुनिक तकनीक में पारंगत और अपने देश की परंपराओं व महापुरुषों पर गर्व करने वाली होनी चाहिए। विद्या भारतीय के अध्यक्ष श्री डी. रामकृष्ण राव ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति देश को उज्जवल भविष्य की ओर ले जाने वाली है। अतः हम सभी का कर्तव्य है कि इसे लागू करने के लिए तैयार हो जाएं। डॉ. आदर्शपाल विग, चेयरमैन पंजाब प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण होना चाहिए जिससे छात्र राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे सकें। उत्तम हिंदू समाचार पत्र के मुख्य संपादक इरविन खन्ना ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का संपूर्ण विकास होना चाहिए।

विद्या भारती अध्यक्ष श्री डी. रामाकृष्णन राव ने कहा कि इस प्रोजेक्ट के माध्यम से देश के 161 राष्ट्रीय महतव के शिक्षण संस्थान में इन सेंटर को स्थापित किया जाएगा ताकि वहां के शिक्षक इन सेंटर में विद्यार्थियों को शिक्षा दे सकें। उन्होंने बताया कि इस महाकुंभ में 18 राज्यों के एक दर्जन के करीब कुलपति, निदेशक व अन्य शिक्षाविदों ने अपने विचार रखे जिन पर चिंतन मंथन किया गया। इसके अलावा देशभर से 2689 लोगों ने भाग लिया 1187 स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों के लोगों ने भाग लिया। उन्होंने कहा कि उनका प्रयास है कि देश के 15 लाख स्कूलों से शोध पत्र आएं। इससे हम चीन का भी रिकॉर्ड तोड़ कर नंबर वन बनने की ओर अग्रसर होंगे।

विद्या भारती की प्रांतीय इकाई सर्वहितकारी शिक्षा समिति पंजाब और एन.आई.टी. जालंधर ने 9 से 11 जून तक तीन दिवसीय शिक्षा महाकुंभ RASE-23 का आयोजन किया। शिक्षा महाकुंभ के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. सुदेश ठाकुर व राष्ट्रीय मीडिया संयोजक डॉ. अमित कंसल ने बताया कि केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान, उत्तर प्रदेश की राज्यपाल महामहिम श्रीमती आनंदी बेन पटेल, गुजरात के राज्यपाल महामहिम श्री अचार्य देवव्रत, मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर धामी सहित देश के प्रमुख राजनीतिक और सामाजिक व्यक्तित्वों के शुभकामना संदेश प्राप्त हुए हैं।

राष्ट्रीय अनुसूचित जाति-जनजाति आयोग के चेयरमैन विजय सांपला, शिव कुमार राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री भाजपा, NIT के निदेशक डॉ. विनोद कनौजिया, विद्या भारती उत्तर क्षेत्र के संगठन मंत्री विजय नड्डा, विद्या भारती पंजाब के संगठन मंत्री श्री राजेंद्र कुमार, प्रो. नवदीप शेखर, एन.आई.टी. के रजिस्ट्रार डॉ. अजय बंसल स्वदेशी जागरण मंच के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री कश्मीरी लाल, विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान के अध्यक्ष श्री रघुनंदन, दैनिक जागरण के मुख्य संपादक श्री अमित शर्मा, भारतीय शिक्षण मंडल पंजाब के संगठन मंत्री श्री नितेश कुमार आदि ने भी विचार व्यक्त किए। शिक्षा महाकुंभ के समापन पर पंजाब के राज्यपाल बनवारी लाल पुरोहित मुख्यातिथि थे।

वैचारिक लेख

हमारा सांस्कृतिक पर्व – गुरु पूर्णिमा

हमारे देश में वैसे तो प्रत्येक दिन किसी न किसी व्रत, पर्व या त्योहार के नाम से जाना जाता है, किन्तु व्यक्ति जीवन एवं समाज जीवन में कुछ दिन विशेष महत्व के माने गए हैं; उनमें गुरु पूर्णिमा भी एक है। गुरु शब्द का स्मरण होते ही व्यक्ति का मन श्रद्धा से भर जाता है और मस्तक किसी श्रद्धेय के प्रति स्वत: ही नत हो जाता है। इसीलिए सम्पूर्ण समाज में गुरु पूर्णिमा के दिन प्रत्येक व्यक्ति अपने गुरु का पूजन-अर्चन करना अपना सौभाग्य मानता है। आषाढ़ मास की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा कहते हैं। आषाढ़ पूर्णिमा महर्षि वेदव्यास का जन्मदिन भी है, अतः कुछ लोग इसे व्यास पूर्णिमा के नाम से भी पुकारते हैं।

आज के तथाकथित आधुनिक लोग इस दिन के महत्व को कम आँकते हुए प्रश्न खड़ा करते हैं कि जब भारत सरकार ने ५ सितम्बर को शिक्षक दिन मनाना निश्चित किया हुआ है तो कुछ लोगों के द्वारा पौराणिक पर्व गुरु पूर्णिमा को मनाने का औचित्य क्या है? प्रथम दृष्टि में आधुनिकतावादियों को यह बात सुसंगत लग सकती है, परन्तु वास्तविकता इससे भिन्न।

जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि

भारत एक सांस्कृतिक राष्ट्र है। भारतीय दृष्टि में और पाश्चात्य दृष्टि में मूलभूत अन्तर है। पाश्चात्य दृष्टि भौतिक और राजनैतिक है, जबकि भारतीय दृष्टि मूल में आध्यात्मिक व सांस्कृतिक है। हमारे देश में कुछ लोगों का मानना है कि आधुनिक होना प्रगति का सूचक है, जबकि सांस्कृतिक होना पिछड़ेपन का द्योतक है। इसलिए प्रगतिशील लोग भारतीय संस्कृति को छोड़कर पाश्चात्य संस्कृति अपना रहे हैं। हमारे यहां सामान्य धारणा है कि जिसकी जैसी दृष्टि होती है, उसे वैसी ही सृष्टि दिखाई देती है। हनुमान का एक ऐसा ही प्रसंग ध्यान में आता है। वे सीता माता की खोज करते-करते जब अशोक वाटिका में पहुंचे तो वहाँ सीता माता को अति दयनीय स्थिति में देखा, फलत: उन्हें क्रोध ने आ घेरा। क्रोध से उनकी आँखें लाल हो गईं, आँखें लाल हो जाने के कारण हनुमान को उस समय अशोक वाटिका के पुष्प लाल दिखाई दिए, जबकि वास्तविकता में वे पुष्प श्वेत रंग के ही थे। इसलिए कहावत बन गई "जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि"।

ऐसी ही स्थिति हमारे देश में प्रगतिवादियों की बनी हुई है। वे पाश्चात्य दृष्टि से प्रत्येक विषय पर विचार करते हैं। पाश्चात्य दृष्टि में राजनीति को केन्द्र में रखकर विचार किया जाता है। उदाहरण के लिए यदि कक्षा में जाकर विद्यार्थियों को भारत का मानचित्र निकालिए, कहा जाय तो वे भारत का राजनैतिक मानचित्र ही निकालेंगे, सांस्कृतिक मानचित्र नहीं। क्यों? इसलिए कि उनकी दृष्टि भी राजनैतिक है, सांस्कृतिक नहीं। ठीक वैसे ही तथाकथित बुद्धिजीवियों को सरकारी उत्सव शिक्षक दिन का महत्व पौराणिक पर्व गुरु पूर्णिमा से अधिक प्रतीत होता है। इसके विपरीत संस्कृति को केन्द्र में रखकर विचार करने वाले भारतीयों की दृष्टि में गुरु पूर्णिमा अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि गुरु पूर्णिमा एक सांस्कृतिक पर्व है। भारतीय संस्कृति केवल भारतीयों का विचार नहीं करती, वह तो सर्वसमावेशी है। सम्पूर्ण वसुधा को अपना परिवार मानकर चलती है, सबके हित का विचार करते हुए सबका कल्याण करने वाली है। इसलिए गुरु पूर्णिमा केवल भारत का पर्व नहीं, सम्पूर्ण विश्व के गुरुओं का सम्मान करने वाला एक महान है और शिक्षक दिन से अधिक महत्वपूर्ण है। दृष्टि भेद के कारण यह मूलभूत अन्तर समझ में नहीं आता।

सांस्कृतिक दृष्टि में गुरु

भारतीय समाज व्यवस्था में गुरु परम्परा का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। सम्पूर्ण सामाजिक ढ़ाँचे के केन्द्र में गुरु ही है। गुरु ही शिष्य को ज्ञान प्राप्ति की ओर उन्मुख करता है। अथर्ववेद कहता है – "आ रोह तमसो ज्योति:" अर्थात् अज्ञान रूपी अन्धकार से निकलकर ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर बढ़ो! एक गुरु ही शिष्य को अज्ञान से निकलने का मार्ग सुझाता है। गुरु ही उसे ऊपर उठाकर ज्ञान मार्ग पर आगे बढ़ाता है। शिष्य जब ज्ञान प्राप्त कर लेता है तो उसके सभी शुभ-अशुभ कर्म नष्ट हो जाते हैं। मुण्डकोपनिषद हमें यही बतलाता है –

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशया:।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे प्यारे।।

अर्थात् कार्य-कारण रूप परात्पर ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाने पर हृदय की अविद्या रूप ग्रन्थि टूट जाती है और समस्त संशय कट जाते हैं तथा समस्त शुभाशुभ कर्म भी नष्ट हो जाते हैं। तनिक विचार करें कि क्या आज के राज्यतंत्र द्वारा नियुक्त शिक्षक से यह अपेक्षा की जा सकती है?

विभिन्न शास्त्र ग्रन्थों में 'गुरु' संज्ञा को अनेक अर्थों में व्याख्यायित किया गया है। उनमें से तीन सन्दर्भों का इस अवसर पर उल्लेख करना समीचीन है।

१. शान्तो दान्त: कुलीनश्च विनीत: शुद्धवेषवान।
शुद्धाचार: सुप्रतिष्ठ: शुचिर्दक्ष: सुबुद्धिमान।
अध्यात्म ध्याननिष्ठश्च मन्त्रतन्त्रविशारद:।
निग्रहानुग्रहे शक्तो गुरुरित्यभिधीयते।।

तन्त्रसार के इस मन्त्र के अनुसार गुरु शान्त, इन्द्रियों का दमन करने वाला, कुलीन, विनीत, शुद्ध वेशयुक्त, शुद्ध आचारयुक्त, अच्छी प्रतिष्ठा से युक्त, पवित्र, दक्ष अर्थात् कुशल, तेजस्वी एवं सद्बुद्धि से युक्त, अध्यात्म व ध्यान में निष्ठा रखने वाला, मन्त्र व तन्त्र को जानने वाला (विचार, व्यवस्था और रचना का मर्मज्ञ) तथा कृपा और शासन दोनों की क्षमता रखने वाला व्यक्ति गुरु कहलाता है।

२. मनुष्यचर्मणा बद्ध: साक्षात्परशिव: स्वयं।
सच्छिष्यानुग्रहार्थाय गूढ़ पर्यटति क्षितौ।
अत्रिनेत्र: शिव: साक्षादचतुर्बाह्च्युत:।
अचतुर्वदनो ब्रह्मा श्रीगुरु: कथित: प्रिये।।

ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार गुरु मनुष्य देहधारी परम शिव है। अच्छे शिष्य पर कृपा करने के लिए ही वह पृथ्वी तल पर भ्रमण करता है।

जारी...

गुरु तीन नैत्र नहीं है, ऐसा शिव। चतुर्भुज नहीं है, ऐसा विष्णु और चतुर्वदन नहीं है, ऐसा ब्रह्मा है।

३. गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुर्साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

देवी भागवत में वर्णित है कि गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है और गुरु ही महेश है। गुरु साक्षात परब्रह्म है, ऐसे गुरु को नमस्कार है।

इन तीनों सन्दर्भों में गुरु विषयक निरूपण सांस्कृतिक दृष्टि से हुआ है। भौतिक दृष्टि वालों के लिए इतनी उच्च कल्पना करना भी सम्भव नहीं है। पाश्चात्य दृष्टि में शिक्षक गुरु की भूमिका में नहीं है, वह मात्र टीचर है। केवल पढ़ाना और परीक्षा पास करवाना ही उसका काम है। जबकि गुरु पढ़ाने तक ही सीमित नहीं है, अपितु वह शिष्य के सम्पूर्ण जीवन को निखारकर उसे मोक्ष मार्ग पर अग्रसर करता है। गुरु शिष्य को अपना मानस पुत्र स्वीकारता है, और पिता की भाँति उसका संरक्षण करता है। जबकि आज का शिक्षक मात्र अध्यापक है।

गुरु हमारे मुक्तिदाता हैं

भारतीय संस्कृति में ज्ञान आत्मतत्व का ही स्वरूप है। वेद यही कहते हैं – "सत्यं ज्ञान अनन्तं ब्रह्म" ब्रह्म सत्य स्वरूप, ज्ञान स्वरूप व अनन्त है। आत्मिक ज्ञान में अज्ञान जनित प्रश्न नहीं होते, क्योंकि अज्ञान भी ज्ञान में विलीन हो जाता है। परन्तु व्यवहार जगत में ज्ञान के रूप और प्रयोजन भिन्न-भिन्न होते हैं। गुरु ज्ञान साधकों के लिए अलग-अलग देश काल व परिस्थिति में उनका मार्गदर्शन करके अपना कर्तृत्व सार्थक करते हैं। हमारे देश में ऐसे श्रेष्ठ गुरुओं की एक सुदीर्घ परम्परा रही है। इस परम्परा में महर्षि वेदव्यास, याज्ञवल्क्य, आचार्य चाणक्य और जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य के नाम प्रमुख हैं। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर इनके जीवन चरित्रों का स्मरण करना हम सबके लिए अत्यन्त प्रेरणादायी है।

आद्य सम्पादक वेदव्यास

महर्षि वेदव्यास का नाम तो कृष्ण द्वैपायन था, किन्तु गत पांच हजार वर्षों से हम लोग उन्हें वेदव्यास नाम से ही जानते हैं। वेदव्यास ने बिखरे पड़े वैदिक मंत्रों का संकलन किया, उनका संपादन किया और अध्येताओं के लिए अध्ययन सुलभ हो इस हेतु से उन्हें चार वेदों में वर्गीकृत किया। इन चारों वेदों को अपने चार शिष्यों में एक-एक वेद अध्ययन-अध्यापन व प्रसार हेतु सौंप दिया। इसीलिए गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने उनके लिए कहा, 'मुनीनामप्यहं व्यासः' मुनियों में मैं व्यास हूँ।

मुनिवर्य व्यास ने मात्र सम्पादन ही नहीं किया अपितु विभिन्न स्तरों, क्षमताओं और योग्यताओं के लोगों के लिए ज्ञान को उनके अनुकूल शैली में प्रस्तुत भी किया। पंडित जन जिन वेदान्त दर्शन के मूलग्रंथ 'ब्रह्मसूत्र' पर आदिकाल से शास्त्रार्थ करते आए हैं, उस ब्रह्मसूत्र की रचना भी आपने ही की है। व्यक्ति जीवन के सभी आयामों में मार्गदर्शन करने वाले उपनिषदों के साररूप उपनिषद श्रीमद् भगवद्गीता भी आपकी ही देन है।

पुरुषार्थ चतुष्टय – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का मार्गदर्शन करने वाले इतिहास ग्रंथ 'महाभारत' की रचना भी आपने की। सर्वसामान्य लोगों को वेदों का रहस्य सुलभ हो, ऐसे अठारह पुराणों की रचना भी आपने ही की। उनके ऐसे प्रभावी कार्य के परिणाम स्वरूप ही व्यास परम्परा निर्माण हुई, जो आज भी विद्यमान है। सर्वजन समाज सत्य व धर्म का अनुसरण कर सके, इस हेतु से जो कथा कहता है, उसे आज भी व्यास और उसकी पीठ को व्यासपीठ कहा जाता है।

जगत के ऐसे आद्य संपादक की आज भी ज्ञानक्षेत्र को आवश्यकता है। भारतीय ज्ञान तो आज भी है, किन्तु उसे युगानुकुल बनाकर सर्वसुलभ करवाने वाले अर्वाचीन वेदव्यास की महती आवश्यकता है। इस रूप में वेदव्यास जी का कर्तृत्व हमारे लिए प्रेरणास्रोत बन सकता है।

पराकोटि के आत्मविश्वासी याज्ञवल्क्य

याज्ञवल्क्य का जीवन ज्ञानक्षेत्र के एक और पहलू को उद्घाटित करता है। विद्वता किसे कहते हैं, विद्वता का स्वाभिमान और गौरव कैसा होता है और उपासना का प्रभाव कैसे होता है? इन सबका मूर्तिमंत आदर्श योगीश्वर याज्ञवल्क्य हैं। उन्होंने पूजा की, उस पूजा का तीर्थ वृक्ष के सूखे डंठल पर गिरा और गिरते ही वह डंठल पल्लवित हो उठा। सार्थक अध्ययन का इससे अधिक और क्या प्रमाण हो सकता है।

आपके लिए शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त करना हस्तामलकवत् है। आपमें पराकोटि का आत्मविश्वास है, तभी तो जनक द्वारा आयोजित शास्त्रार्थ में प्रस्तुत एक हजार गायें, शास्त्रार्थ पूर्व ही ले लेने का साहस वे कर सके। जब वे शास्त्रार्थ में विजयी हुए, तब पराजित की मृत्यु जो उनके अहंकार के कारण हुई थी, उसे देखते ही उन्हें ज्ञान और मिथ्या ज्ञान का भेद समझ में आ गया। परिणामस्वरूप उन्होंने संन्यास लेने का निश्चय कर लिया। उन्हें यह भान हुआ कि ज्ञान और ज्ञान से प्राप्त होने वाले यश, कीर्ति व धनादि गौण हैं। उपासना सदैव ज्ञान की करनी चाहिए, शेष बातों की नहीं। शेष बातों के मोह से ऊपर उठने पर ही ज्ञान स्वयं ज्ञानसाधक का वरण कर लेता है।

याज्ञवल्क्य संसार के आद्य संन्यासी थे। आपने ही निवृत्ति मार्ग का प्रणयन किया। ज्ञान का पराकोटि का गौरव व आत्मविश्वास हम उनसे सीख सकते हैं। हमें आज उनके जैसे ज्ञान उपासकों की आवश्यकता है।

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर हम सभी अपने-अपने गुरुओं का पूजन-अर्चन तो अवश्य करें, परन्तु साथ ही साथ यह संकल्प भी लें कि जिस प्रकार हमारे पूर्व गुरुओं ने बिखरे भारतीय ज्ञान को अपने संकलन, संपादन व लेखन के द्वारा सर्वसुलभ बनाया, उसी प्रकार हम भी ज्ञान के उपासक बनकर भारतीय ज्ञान को युगानुकुल बनाकर उसे शिक्षा की मुख्यधारा में लायें। हम भारतीय ज्ञान की पुनर्प्रतिष्ठा करने में सफल हुए तो वह दिन दूर नहीं, जब भारत पुनः विश्व गुरुत्व प्राप्त कर, सम्पूर्ण विश्व का कल्याण करने की अपनी भूमिका का निर्वहन करने में समर्थ होगा।

– वासुदेव प्रजापति
(सचिव, विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान, कुरुक्षेत्र)

विद्या भारती दिल्ली प्रान्त- नव चयनित आचार्य आवासीय वर्ग

दिल्ली । विद्या भारती, दिल्ली प्रान्त के तत्वाधान में दस दिवसीय नव चयनित आचार्य आवासीय वर्ग का आयोजन 17 से 26 जून 2023 तक महाशय चूनी लाल सरस्वती बाल मंदिर, विभागीय परिसर, हरि नगर, दिल्ली में किया गया। इस आवासीय वर्ग में दिल्ली प्रान्त की दो समितियों के 21 विद्यालयों से आये 74 आचार्यों ने दस दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस वर्ग की पाठ्यक्रम विभाजन योजना के अनुरूप कुल 10 वैचारिक, 19 शैक्षणिक, 10 चर्चा, 4 स्वाध्याय एवं 9 सत्र रात्रि कार्यक्रम के रहे। इसके अतिरिक्त 2 सत्र पाठ योजना, 1 सत्र सेवा भ्रमण तथा 1 सत्र TLM निर्माण के लिए उपयोग हुए।

प्रत्येक दिन के वंदना सत्र में शिक्षार्थियों को क्षेत्र तथा प्रान्त से आये कार्यकर्ताओं के विचारों को सुनने और आत्मसात करने का अवसर प्राप्त हुआ। वैचारिक सत्रों में विद्या भारती, उत्तर क्षेत्र से श्री सुरेन्द्र अत्रि, श्री हर्ष कुमार, श्री विजय नड्डा, श्री बाल किशन, श्री किशन वीर तथा दिल्ली प्रान्त से श्री जतिन, श्री रवि कुमार, श्री संजय शर्मा, श्री उपेंद्र शास्त्री एवं बहिन नम्रता दत्त ने उपस्थित शिक्षार्थियों का मार्गदर्शन किया।

उक्त वक्ताओं ने राष्ट्रीय कार्यकर्ता संघ, विद्या भारती एवं भारतीय जीवन दर्शन से जुड़े कुछ गूढ़ विषयों पर शिक्षार्थियों के समक्ष अपने विचार रखे।

शैक्षणिक सत्रों में दिल्ली प्रान्त के विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाचार्यों ने विशिष्ट शैक्षिक विषयों पर बहुत ही रोचक सत्र लिए जिसमें मुख्यतः कक्षा प्रबंधन, आचार्य दैनन्दिनी, पाठ योजना निर्माण, प्रश्न निर्माण, नील पत्र निर्माण तथा प्रश्न पत्र निर्माण जैसे आचार्य उपयोगी विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

क्रियात्मक एवं चर्चात्मक शिक्षण विधि तथा गतिविधियों से परिपूर्ण इन सत्रों में सभी शिक्षार्थी आचार्यों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। इस वर्ग में नवाचार के अंतर्गत प्रथम चार दिन स्वाध्याय के भी सत्र रहे जिस के लिए इस परिसर में एक स्वचालित पुस्तकालय निर्मित किया गया। सभी शिक्षार्थियों ने अपनी-अपनी रूचि अनुसार इस पुस्तकालय से एक पुस्तक चुनकर आगामी चार दिन इस पुस्तक को स्वाध्याय सत्र में पढ़ा व पुस्तक समीक्षा हेतु नोट्स भी बनाये। बाद में सभी आचार्यों ने गटशः पुस्तक समीक्षा लेखन भी किया। इस सत्र में एक नवचार - सेवा भ्रमण भी रहा, जिसमें शिक्षार्थी गटों में विभाजित हो विभिन्न उदेश्यों को लेकर समाज संपर्क के लिए गए।

संस्कार केंद्रों, सेवा बस्तयों एवं अभिभावक संपर्क हेतु छात्रों के घर जाने के अलावा शिक्षार्थी हरि नगर स्थित गुरुकुल भी गए। सेवा भ्रमण के इस कार्यक्रम ने सभी को जीवन के कुछ अनभिज्ञ पहलुओं से अवगत करवाया। लगभग सभी के लिए सेवा भ्रमण का यह अनुभव सोच और समझ को पूर्णतः परिवर्तित करने वाला रहा।

रात्रि के अनौपचारिक सत्रों में भी इस वर्ष नवीन प्रयोग किये गए। अंतिम रात्रि अनौपचारिक सत्र में प्रान्त के संगठन मंत्री श्री रवि कुमार के उद्बोधन पश्चात् पुण्य भूमि भारत नाम से भूमि वंदन का कार्यक्रम रहा। शिक्षार्थियों द्वारा भोजन स्थल पर बनाये अखंड भारत के मानचित्र को सभी ने दीपांजलि अर्पित की। तत्पश्चात पुष्पांजलि के द्वारा भारत माता के देवी स्वरुप का पूजन कर सभी अपने कक्षों को लौटे। इस कार्यक्रम की तेजस्विता ने सभी के मनों पर अमिट छाप छोड़ी है।

भारती विद्या मंदिर, जम्मू बना "डिजिटल लर्निंग इकोसिस्टम वाला प्रथम डिजिटल विद्यालय"

6 जून 2023 को, भारती विद्या मंदिर, अम्बफला, जम्मू "डिजिटल लर्निंग इकोसिस्टम वाला प्रथम डिजिटल विद्यालय" बना, जिसमें प्रत्येक शिक्षार्थी और शिक्षक को कक्षा में टैबलेट और डिजिटल बोर्ड प्रदान किया जाएगा।

"सपोर्टआश्रय" के चेयरमैन सतीश झा ने विद्यार्थियों को टैबलेट भी दिये।

पूर्व छात्र परिषद दिल्ली ने किया प्रांतीय बैठक का आयोजन

दिल्ली। विद्या भारती पूर्व छात्र परिषद् दिल्ली प्रांत ने सरस्वती बाल मंदिर, राजौरी गार्डन में 12 जून को बैठक का आयोजन किया। बैठक में विद्या भारती उत्तर क्षेत्र के संगठन मंत्री श्री विजय नड्डा, राष्ट्रीय सहसंयोजक श्री राहुल सिंघल, विद्या भारती की पूर्व छात्रा और दिल्ली विश्वविद्यालय के शहीद राजगुरु कॉलेज की प्राचार्य व दिल्ली विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग की निदेशक पायल मरगी आदि ने पूर्व छात्रों का मार्गदर्शन किया।

पूर्व छात्र एसीपी श्री धीरज नारंग ने कहा कि उन्होंने विद्या भारती के विद्यालय से बचपन में जो संस्कार सीखे थे उनके कारण अपनी अलग पहचान बनाने में सफल रहे हैं। उन्होंने अपने विद्यालय के प्रेरक और रोचक अनुभवों को भी साझा किया। विद्या भारती उत्तर क्षेत्र के संगठन मंत्री श्री विजय नड्डा ने पूर्व छात्रों का मार्गदर्शन किया। पीपीटी के माध्यम से पूर्व छात्र परिषद दिल्ली प्रांत ने बीते दिनों किए गए कार्यों की जानकारी दी। पूर्व छात्र आईएएस अधिकारी श्री राकेश गुप्ता द्वारा शुरू किये गए प्रोजेक्ट "एनटीएसई" की भी जानकारी दी गई।

इस प्रोजेक्ट के तहत विद्या भारती के विद्यालयों में 5वीं कक्षा से प्रतिभाशाली छात्रों की पहचान कर विशेष प्रोत्साहन दिया जाता है। इसके अलावा रक्तदान शिविर, असमर्थ बच्चों की पढ़ाई में सहायता, करियर परामर्श आदि कार्यों की भी जानकारी दी गई। विभागों और विद्यालय संयोजकों के साथ चर्चा में आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा, नियमित मिलन और सहभागिता आदि पर चर्चा की गई।

बैठक में विद्या भारती दिल्ली प्रांत के 26 विद्यालयों के सयोजक, सहसंयोजक एवं पूर्व छात्र परिषद् सदस्य, आचार्य प्रमुखों के साथ विद्या भारती की पूर्व छात्रा व निदेशक एसएस श्रीमती पायमो, श्री टीपी योगेश कौशिक, IHBAS दिल्ली में एसोसिएट प्रोफेसर, सीनियर कंसल्टेंट और HOD न्यूरो एनेस्थिसियोलॉ एंड क्रिटिकल केयर डॉ अरविन्द आर्या, कई उद्योगपति, उद्यमी, प्रोफेसर आदि उपस्थित रहे।

बैठक का आयोजन विद्या भारती दिल्ली प्रांत के संगठन मंत्री श्री रवि कुमार, पूर्व छात्र परिषद् दिल्ली प्रान्त के संयोजक श्री अनुभव अग्रवाल के निर्देशन में किया गया।

प्रांतीय प्रधानाचार्य वर्ग का अयोजन

सतत चलना,साथ चलना हमारा संकल्प है - श्री श्रीराम आरावकर अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री विद्या भारती

महाकोशल | विद्या भारती सरस्वती शिक्षा परिषद महाकोशल की योजना अनुसार वर्ष भर संचालित होने वाली गतिविधियों के निमित्त प्रांतीय प्रधानाचार्य वर्ग का आयोजन सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पगारा मार्ग सागर में हुआ। जिसमें महाकौशल के लगभग 275 प्रधानाचार्य सम्मिलित हुए। इस अवसर पर डॉ. आनंद राव क्षेत्र सह संगठन मंत्री मध्य क्षेत्र, श्री हीरा सिंह राजपूत जिला पंचायत अध्यक्ष सागर, श्री आदित्य सिंह आयुक्त GST जबलपुर विशेष रूप से उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय खेलकूद विभाग की योजना बैठक

हिमाचल प्रदेश। हिमाचल शिक्षा समिति द्वारा संचालित सरस्वती विद्या मन्दिर हिम रश्मि परिसर, विकासनगर, शिमला हिमाचल प्रदेश में में आयोजित विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की राष्ट्रीय खेलकूद विभाग की योजना बैठक सम्पन। बैठक में अखिल भारतीय सहसंगठन मंत्री श्री श्रीराम आरावकर, श्री हेमचन्द्र संगठन मंत्री पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र व अखिल भारतीय खेलकूद प्रभारी और श्री राजेन्द्र सिंह अध्यक्ष खेल परिषद सहित कुल 26 अखिल भारतीय व क्षेत्रीय पदाधिकारीयों ने लिया भाग।

विद्या भारती खेल विभाग | योजना बैठक के निर्णय

- सभी खेल आचार्यों की सूची एवं डाटा 15 अगस्त तक विद्यालयशः प्रान्त के द्वारा खेल कार्यालय रायपुर भेजना आवश्यक है।
- खेलकूद की आचार्य बहिनों का 5 दिन का वर्ग अलग से होगा। शारीरिक व खेलकूद के लिए आचार्य बहिनों की भी नियुक्ति हो।
- पूरे देश में 288 SAi Centres है। SAi Centres के डायरेक्टर से अपना सम्पर्क हो। उनके माध्यम से अपने अच्छे खिलाड़ी बच्चों का प्रशिक्षण व चयन हो सकता है।
- वर्ष भर में दो बार सभी भैया बहिनों तथा आचार्य दीदियों का बैटरी टेस्ट हो, इस हेतु क्षेत्र की ओर से पत्र भेजा जाये।
- खेलकूद के वृत्त संकलन हेतु एक-एक प्रपत्र खेलकूद विभाग से प्रान्तों को जाये। उसी आधार पर वृत्त संकलन विद्यालयों से प्रान्त, प्रांत से क्षेत्र व क्षेत्र से अखिल भारतीय में।
- विभिन्न प्रशिक्षण वर्गों में भी बैटरी टेस्ट हो।
- खेलकूद के विभिन्न प्रशिक्षणों में सभी प्रान्तों व क्षेत्र का प्रतिनिधित्व हो।
- सभी क्षेत्रों में व्यवस्थित खेल कार्यालय हो, उसमें कम्प्यूटर व रिकॉर्ड रखने की व्यवस्था हो।
- खेलों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए खेल एकेडमी शुरू हो।
- अच्छे खिलाड़ियों के 5 से 7 दिन के कैम्प आयोजित किए जायें।
- पूर्ण संसाधनों से युक्त विभिन्न खेल केन्द्र प्रान्तों में विकसित किये जायें।
- 29 अगस्त को परम्परागत खेल दिवस आयोजित करें। प्रान्त/क्षेत्र स्तर से परम्परागत खेलों के वीडियो बनाकर भेजने की व्यवस्था करना।
- प्रधानाचार्य योजना बैठकों में शारीरिक व खेलकूद के विषय व योजना क्षेत्र प्रमुखों द्वारा रखी जाये ताकि प्रत्येक विद्यालय तक योजना की जानकारी हो।
- खेलकूद के आचार्यों को खेल के ही कालांश दिए जायें।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस : 21 जून 2023

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर विद्या भारती विद्यालयों में सभी छात्रों व आचार्यों द्वारा योग किया व सिखाया गया।

विश्व पर्यावरण दिवस : 5 जून 2023

विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में लिया गया "पॉलिथीन त्याग का संकल्प"
साथ ही विद्या भारती के विद्यालयों में छात्रों व आचार्यों द्वारा किया गया वृक्षारोपण का कार्य।

ट्रेन दुर्घटना के पीड़ितों की सहायता को आगे आए विद्या भारती के कार्यकर्ता

20 सहायता केंद्रों और 7 रक्त संग्रह केंद्रों के माध्यम से की मदद

उड़ीसा । उड़ीसा के बालासोर में 2 जून 2023 को हुई भीषण रेल दुर्घटना के पीड़ितों की सहायता के लिए विद्या भारती की उड़ीसा इकाई, शिक्षा विकास समिति के कार्यकर्ता तत्काल दुर्घटनास्थल पर पहुंचे और 20 सहायता केंद्र स्थापित कर राहत एवं बचाव कार्यों में लग गए। विद्या भारती के 9 विद्यालयों के शिक्षक, छात्र, अभिभावक और अन्य कार्यकर्ता जिला प्रशासन की ओर से काफी सहायता मिलने से पहले ही घटनास्थल पर पहुंच गए थे और ट्रेन की बोगियों में फंसे यात्रियों को बाहर निकाला। इसके साथ ही 167 कार्यकर्ता रक्तदान के लिए भी आगे आए। रक्त संग्रह के लिए सात केंद्र खोले गए। पीड़ित यात्रियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हेल्प-डेस्क स्थापित की गई थीं। कुछ यात्रियों को वैकल्पिक साधनों से उनके गंतव्य तक भेजने के लिए नकद धनराशि भी प्रदान की गई। कार्यकर्ताओं ने वस्त्र, पेयजल, बिस्कुट, फल, सूखे मेवे, पका हुआ भोजन आदि का भी वितरण किया।

स्व.भाऊसाहब भूस्कुटे की जयंती पर विविध कार्यक्रमों का आयोजन

नर्मदापुरम म. प्र. | न्यास द्वारा संचालित सभी प्रकल्पों में भाऊसाहब भुस्कुटे की जयंती पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर द्वारा बनखेड़ी के शासकीय चिकित्सालय में रोगियों को फल वितरित किए गए। न्यास द्वारा संचालित उद्यानिकी परिसर में गत वर्ष स्वयं द्वारा लगाये गए पौधों के साथ कार्यकर्ताओं ने सेल्फी ली। न्यास द्वारा संचालित विद्यालय परिसर स्थित हनुमान मंदिर में सुन्दरकांड पाठ के पश्चात् हनुमान की आरती की गई। शिशु वाटिका की दीदियों ने न्यास परिसर को सुन्दर बनाने के लिए फूलों के पौधे रोपित किए। ग्राम ज्ञानपीठ परिसर में पौधारोपण किया गया। न्यास द्वारा संचालित सामाजिक गतिविधि के अंतर्गत सिलाई प्रशिक्षण के नवीन बैच का भी प्रारंभ किया गया।

सिक्किम में बाढ़ पीड़ितों की विद्या भारती के कार्यकर्ताओं ने की सहायता

सिक्किम | विद्या भारती के कार्यकर्ताओं ने सिक्किम में बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए जरूरी सामग्री प्रदान की। कंचनजंगा सेवा ट्रस्ट ने सिक्किम के गेजिंग जिले में भारी बारिश से आई बाढ़ के कारण प्रभावित परिवारों को चावल, दाल, तेल, शक्कर, वस्त्र एवं बच्चों के लिए आवश्यक सामग्री आदि वितरित की गई। इसके अलावा पशुओं के लिए चारा भी वितरित किया गया।

संस्कृति बोध परियोजना की अखिल भारतीय कार्यगोष्ठी

संस्कृति बोध परियोजना को समाजव्यापी बनाएं : गोबिंद चंद्र महंत

जीवन व्यवहार में परिलक्षित हो संस्कृति : अवनीश भटनागर

कुरुक्षेत्र। विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान में 19-20 जून 2023 को दो दिवसीय संस्कृति बोध परियोजना की अखिल भारतीय कार्यगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्या भारती के संगठन मंत्री श्री गोबिंद चंद्र महंत ने कहा कि संस्कृति बोध परियोजना को विद्यालय तक सीमित न रखकर समाजव्यापी बनाना है। भारतीय संस्कृति विश्व के कल्याण की कामना करती है। हमारा कार्य केवल विद्यालय चलाना नहीं अपितु समाज को जगाना भी है। समाज बोध, संस्कृति बोध, अध्यात्म बोध और देश बोध सभी के लिए आवश्यक है।

विद्या भारती के महामंत्री श्री अवनीश भटनागर ने कहा कि ज्ञान सार्वभौमिक है, परन्तु शिक्षा सदैव राष्ट्रीय होती है। शिक्षा के अंदर राष्ट्रीयता का भाव वहां के लोगों के विचार के आधार पर, संस्कृति के आधार पर, जीवन दृष्टि के आधार पर तय होता है। राष्ट्र का विचार ही विद्या भारती का विचार है। राष्ट्रीयता के इस भाव को शिक्षा के माध्यम से समाज में ले जाने का प्रयास विद्या भारती पिछले लगभग 70 वर्षों से कर रही है। संस्कृति बोध परियोजना केवल परीक्षा, कार्यक्रम, मंच प्रदर्शन तक सीमित न रह जाए, अपितु व्यवहार में भी परिलक्षित हो। संस्कृति जीवन व्यवहार में भी जुड़े। संस्कृति स्वभाव में आए, संस्कृति के प्रति गौरव का भाव स्वभाव में आए। संस्कृति शिक्षा संस्थान के अध्यक्ष डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी ने कहा कि "स्मृति" शब्द ज्ञान के निकट इतना नहीं जितना बोध के निकट है। हम सब एक प्रकार से संस्कृति प्रचारक हैं। भारतीय संस्कृति क्या है, इसे दूसरे तक पहुंचाने का काम हमारे पास है। संस्कृति का बोध अपने अंदर ले आएं तो ही हम दूसरे को संस्कृति का बोध पढ़ाने के लिए, दीप से दीप जलाने के लिए योग्य भी होंगे और हमारे भीतर आगे बढ़ने की क्षमता होगी। ज्ञान तभी पूरा होता है जब वह बोध हो जाए, बोध का अर्थ विनम्रता आ जाए, अहंकार का सर्वथा अभाव हो जाए। संस्कृति आत्म विश्वास पैदा करती है, सबके साथ जोड़ती है, ऐसा अदम्य साहस देती है जिससे शंकाओं का स्वतः ही समाधान हो जाता है।

कार्य-गोष्ठी में उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, केरल, झारखंड, उड़ीसा, बंगाल, तेलंगाना, असम, मध्य प्रदेश, जम्मू कश्मीर, छत्तीसगढ़, बिहार, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र आदि राज्यों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। संस्थान के निदेशक डॉ. रामेन्द्र सिंह ने लगभग सभी राज्यों से आए क्षेत्र, प्रान्त संयोजकों एवं सह-संयोजकों के रूप में 80 प्रतिभागियों का अभिवादन करते हुए संस्कृति ज्ञान परीक्षा की संपूर्ण प्रक्रिया की जानकारी दी और सुझाव भी लिए। संस्कृति बोध परियोजना के विषय संयोजक श्री दुर्ग सिंह राजपुरोहित ने आगामी कार्य योजना की जानकारी ली। संस्थान के सचिव श्री वासुदेव प्रजापति, संस्कृति बोध संस्थान के सहसचिव श्री पंकज शर्मा भी उपस्थित रहे।

प्रवीण सूची में आए छात्रों के सम्मान का विशेष कार्यक्रम

शिशु मन्दिर केदारधाम आवासीय विद्यालय मे प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन

ग्वालियर, मध्य प्रदेश | सरस्वती शिशु मन्दिर केदारधाम आवासीय विद्यालय में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें शैक्षणिक व सांस्कृतिक स्तर पर अच्छा परिणाम प्राप्त करने वाले छात्रों को प्रमाणपत्र एवं शील्ड देकर सम्मानित किया गया है । इस अवसर पर सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान मध्यभारत प्रान्त के प्रादेशिक सचिव श्री शिरोमणि दुबे, नगरीय शिक्षा के सहप्रान्त प्रमुख श्री चन्द्रहंस पाठक, ग्वालियर विभाग समन्यवयक श्री मुकुट बिहारी शर्मा एवं विद्यालय के प्रबंधक एवं प्राचार्य मंच पर उपस्थित थे।

समारोह में विद्यालय के छात्रों के साथ उनके अभिभावकगण भी उपस्थित थे। पालकों ने मंच से अपने बालक में हो रहे सुधार से अवगत कराने के साथ-साथ कुछ अच्छे सुझाव भी रखे । श्री शिरोमणि दुबे ने कहा कि सरस्वती शिशु मन्दिरों में पढ़ रहे बालकों में शिक्षा के साथ-साथ संस्कार भी देखने को मिलता है। आज देश को जिस तरह के नागरिकों की आवश्यकता है उनका निर्माण शिशु मन्दिरों में होता है। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय की दीदी डॉ. एकता अग्रवाल एवं वरिष्ठ आचार्य श्री राहुल सिंह राठौर द्वारा किया गया।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस सैनिक विद्यालय केंद्र शासित प्रदेश सेलवास में शिक्षण कार्य प्रारंभ

अखिल भारतीय कबड्डी निर्णायक प्रशिक्षण वर्ग

कबड्डी अमरता का संदेश देती है -डोमेश्वर साहू

खुर्जा जिला बुलंदशहर | अखिल भारतीय कबड्डी निर्णायक प्रशिक्षण वर्ग सरस्वती विद्या मंदिर खुर्जा जिला बुलंदशहर में संपन्न हुआ। इसमें 6 क्षेत्रों के 49 प्रतिभागी सम्मिलित हुए। वर्ग के समापन समारोह में विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान पश्चिम उत्तर प्रदेश क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष श्री मनवीर सिंह एवं क्षेत्रीय संगठन मंत्री पश्चिम उत्तर प्रदेश क्षेत्र श्री डोमेश्वर साहू का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। उन्होंने कहा कि खेलकूद की सूक्ष्मतम विशेष जानकारी खेल अधिकारियों को होनी चाहिए, जिससे खिलाड़ियों के साथ कभी भी निर्णय में न्यूनता की संभावना न रहे। कबड्डी हमें अमरता का संदेश देती है और चुनौतियों का सामना करने के लिए भी सामर्थ्य प्रदान करती है।

नीमच में विद्या भारती मालवा द्वारा श्री अवनीश भटनागर अखिल भारतीय महामंत्री के साथ पत्रकार वार्ता का आयोजन

भाषा संगम एप्प

भाषा संगम ऐप को ऑनलाइन भाषा सीखने की सुविधा के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह ऐप उपयोगकर्ता को एक साथ जितनी चाहें उतनी भाषाएँ सीखने की अनुमति देता है। "**एक भारत श्रेष्ठ भारत**" के तहत, शिक्षा मंत्रालय और मल्टीभाषी द्वारा संचालित मायगॉव इंडिया भारतीय भाषा शिक्षण ऐप लेकर आया है जो भारत के लोगों को न केवल एक ऐप के माध्यम से विभिन्न भाषाओं में रोजमर्रा की बातचीत के बुनियादी वाक्य सीखने में सक्षम करेगा, बल्कि उनके लिए सीखने के दरवाजे भी खोलेगा। अपने देश की विशाल और समृद्ध संस्कृति, किसी भी भाषाई बाधा से अछूती ऐप।

- **भारत सरकार द्वारा निर्मित**
- **22 भारतीय भाषाओं को सीखने का अवसर**
- **गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध**

केरल में जिला स्तर पर आयोजित जिला शिक्षा बैठकों के चित्र

नव चयनित आचार्य प्रशिक्षण वर्ग

नव चयनित आचार्य प्रशिक्षण वर्ग सरस्वती शिशु मंदिर अमरकंटक का उद्घाटन सत्र 14 जून 2023

भारतीय शिक्षा समिति जम्मू कश्मीर, पूर्व छात्र परिषद, लेह

जम्मू कश्मीर, लेह | रतीय शिक्षा समिति जम्मू कश्मीर, पूर्व छात्र परिषद, लेह का गठन दिनांक 17 जून 2023 को हुआ जिसमें 42 पूर्व छात्रों ने भाग लिया।

पूर्व छात्र परिषद के पदाधिकारियों को भी सर्व सहमति से चुना गया

प्रांत संगीत कार्यशाला:विद्या भारती सिक्किम

2-4 जून 2023, कुल 50 प्रतिभागिता जिनमें 23 आचार्य व 16 विद्यार्थी व अन्य 11 ने भाग लिया

विद्या भारती ने असम हाईस्कूल परीक्षा की प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त छात्रों को किया सम्मानित।

मातृभाषा माध्यम में अहम भूमिका निभा रहे शंकरदेव शिशु निकेतन : डॉ रनोज पेग

असम | शिशु शिक्षा समिति असम द्वारा हाईस्कूल परीक्षा की प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का अभिनन्दन एवं सम्मान समारोह का आयोजन गुवाहाटी मैडिकल कॉलेज सभागार में किया गया। समिति द्वारा जुगल किशोर एवं राम दुलारी मालपानी की स्मृति में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि असम के शिक्षा मंत्री डॉ रनोज पेगू, विशिष्ट अतिथि असम उच्चतर माध्यमिक शिक्षा परिषद के चेयरमैन रुक्मा गोहाईं बरुआ, प्राग्ज्योतिषपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ स्मृति कुमार सिन्हा, विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र के संगठन मंत्री डॉ पवन तिवारी, शिशुशिक्षा समिति असम के अध्यक्ष डॉ दिब्यज्योति महन्त, महामंत्री श्री कुलेन्द्र कुमार भगवती एवं विशिष्ट समाजसेवी श्री राजेश मालपानी मंच पर उपस्थित रहे। डॉ रनोज पेगू ने शिशु शिक्षा समिति को अभिनन्दन करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित की। उन्होंने कहा विद्या भारती शिक्षा क्षेत्र में विशेष योगदान प्रदान कर रही है।

अभिनन्दन एवं संवर्धना समारोह में शंकरदेव शिशु निकेतन ठेकियाजुली के छात्र हृदम ठाकुरिया राज्य में प्रथम स्थान प्राप्त

राज्य की प्रावीण्य सूची में तृतीया स्थान शंकरदेव शिशु निकेतन बाहरघाट के छात्र मृगांक भट्टाचार्या, चतुर्थ स्थान बंचित चौधुरी शंकरदेव शिशु निकेतन सार्थेबारी के छात्र रितुपन दास, पञ्चम स्थान शंकरदेव शिशु निकेतन अमोलापट्टी के छात्र निलुत्पल मण्डल, छटवां स्थान शंकरदेव शिशुनिकेतन बोरका सतगांव की छात्रा सन्दिता दास, सातवाँ स्थान शंकरदेव शिशु निकेतन बाघमारा की छात्रा प्लबिता दास एवं शंकरदेव शिशु निकेतन वानीपुर के छात्र पिजुश नाथ, आठवां स्थान शंकरदेव शिशुनिकेतन रामदिया के छात्र अर्णव ज्योति दास तथा नवम स्थान शंकरदेव शिशु निकेतन शिमलगुरी की छात्रा बरष बरषा चेतिया को शिक्षा मंत्री डॉ रनोज पेगू ने सम्मानितकिया। समारोह में प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त छात्रों के निकेतनों के प्रधानाचार्य एवं शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम प्राप्त करनेवाले निकेतनों के प्रधानाचार्यों को सम्मानित किया गया ।शिशु शिक्षा समिति असम के अन्तर्गत 337 विद्यालयों के 9957 विद्यार्थियों ने हाईस्कूल की बोर्ड परीक्षा में भाग लिया। 186 विद्यालयों के शत-प्रतिशत विद्यार्थी परीक्षा में उत्तीर्ण हुए जबकि 14 विद्यालयों के शत-प्रतिशत विद्यार्थियों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

प्रान्त स्तरीय प्राचार्य सम्मेलन

दृढ़ संकल्प निर्भीकता साहस त्याग समर्पण का उदाहरण है वीर छत्रपति शिवाजी का जीवन - जुड़ावन सिंह

बिलासपुर | सरस्वती शिशु मंदिर कोनी बिलासपुर छत्तीसगढ़ में 29 मई से 2 जून 2023 तक आयोजित प्रान्त स्तरीय प्राचार्य सम्मेलन के समापन दिवस पर आयोजित इस प्रबोधन के अवसर पर अखिल भारतीय सहसंगठन मंत्री श्री श्रीराम आरावकर, प्रांत के संगठन मंत्री डॉ. देवीनारायण साहू, सचिव श्री विवेक सक्सेना, प्रांतीय सह संगठन मंत्री श्री राजेंद्र, आदि अधिकारियों की उपस्थिति में प्रबोधन प्राप्त हुआ।

श्री जुड़ाजीवन सिंह ठाकुर ने सभी उपस्थित जनों को उन्मुख होकर प्रेरणा देते हुए कहा कि वीर शिवाजी के अमर इतिहास से हिंदू साम्राज्य के संकल्प का स्मरण करते हुए हमको अपने जीवन में उनके चरित्र को उतारने की जरूरत है। मात्र 50 वर्ष की आयु में ही वीर शिवा अपना कार्य करके चले गए यदि हम उनके जीवन का कुछ अंश अपने व्यक्तित्व में ओतप्रोत कर सकें। यह अनुकरणीय होगा। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय कार्यकर्ता संघ के 6 में से एक महत्वपूर्ण उत्सव हिंदू साम्राज्य स्थापना दिवस का भी है जो कि समाज जागरण का उत्सव है।

विद्या भारती उपलब्धियां : लोक सेवा आयोग परीक्षा परिणाम 2023

नाम : साक्षी पाठक
विद्यालय: सरस्वती शिशुमंदिर महाकालपुरम , उज्जैन
उपलब्धि : बिहार लोक सेवा आयोग

नाम : शिवा पाठक
विद्यालय: सरस्वती शिशुमंदिर महाकालपुरम , उज्जैन
उपलब्धि : मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग

नाम : आशुतोष गुप्ता
विद्यालय: सरस्वती शिशु मंदिर गोटेगांव
उपलब्धि : मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग

नाम : ऐश्वर्या मूदड़ा
विद्यालय: सरस्वती विद्या मंदिर तलैया, विदिशा
उपलब्धि : मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग में चयन

नाम : सौरभ गंधर्व
विद्यालय: सरस्वती शिशु मंदिर बंडा
उपलब्धि : डिप्टी कलेक्टर पद पर चयन हुआ

नाम :यशोदा भिलाला
विद्यालय: सरस्वती शिशु मंदिर हेडगेवार कालोनी राजगढ़
उपलब्धि : मध्यप्रदेश अधिनस्थ लेखा सेवा अधिकारी

नाम : मनीष धनगर
विद्यालय: सरस्वती शिशु विद्या मंदिर शुजालपुर मंडी
उपलब्धि : प्रथम प्रयास में ही एमपी पी एस सी परीक्षा उतीर्ण कर डिप्टी कलेक्टर के लिए चौथी रेंक पर

नाम : हेमंत पांडे
विद्यालय: सरस्वती उत्तर माध्यमिक विद्यालय नागौद
उपलब्धि : डीएसपी पद में चयन

विद्या भारती उपलब्धियां

सीए देवांशु गुप्ता बने वित्त मंत्रालय में ग्रेड ए अधिकारी | IFSCA में ऑल इंडिया रैंक 5 के साथ हुआ चयन

नाम : देवांशु गुप्ता
विद्यालय: आदर्श विद्या मन्दिर,सांवलीरोड सीकर (जयपुर प्रान्त)
उपलब्धि : IFSCA में ऑल इंडिया रैंक 5 के साथ हुआ चयन (पेशे से चार्टर्ड अकाउंटेंट)

नाम : स्नेहा नेगी
विद्यालय: विद्या मंदिर श्रीकोट
उपलब्धि : इसरो (ISRO) में वैज्ञानिक पद के लिया चयनित

नाम : प्रिया पाठक
विद्यालय: सरस्वती उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नागोद
उपलब्धि : डीएसपी (DSP) पद के लिया चयनित

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

प्रज्ञा सदन

.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर,
नेहरू नगर, महात्मा गांधी मार्ग,
नई दिल्ली - 110065

@VidyaBharatiIN

www.vidyabharti.net
www.vidyabharatisamvad.com

vbabss@yahoo.com vbsamvad@gmail.com

91 - 11 -29840013, 29840126, 20886126

सेवा में ,